फूलों की तुड़ाई एवं उपज :

अफ्रिकन एवं फ्रेंच गेंदा क्रमशः बीज बोने के 75–90 दिन और 60–75 दिन बाद फूलने लगते हैं। फूलों की तुड़ाई सुबह या शाम के समय करनी चाहिए। पूर्ण रूप से खिले फूल हाथ से या किसी कैंची की सहायता से तोड़ना चाहिए। तुड़ाई उपरांत फूलों को हवादार, छाया व ठण्डे स्थान पर इकट्ठा करना चाहिए। एक हैक्टर मे लगभग 7 से 10 टन फूल प्राप्त हो सकता है।

कीट एवं रोग नियंत्रणः

गेंदा फसल में निम्नलिखित प्रमुख रोग लगने की संभावना होती है :–

प्रमुख रोग

डेम्पिंग ऑफः–

यह रोग प्रमुख रुप से नर्सरी अवस्था में लगता है। पौधे मुरझाने लगते हैं। अधिक नम तथा गर्म भूमि में यह रोग तेजी से बढ़ता है।

उपचारः–

नर्सरी की बुवाई से पूर्व 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. कार्बेण्डाजिम/मेंकोजेब फफूंद नाशक दवा से बीज उपचार करना चाहिए। प्रभावित पौधों पर मेंकोजेब का घोल बनाकर एक सप्ताह के अंतर पर छिड़काव करना चाहिए।

अल्टरनेरीया पत्ती धब्बा/पुष्प कली सड़नः–

यह फफूंद जनित (*अल्टरनेरीया डाएन्थी*) रोग है। इसके लक्षण सर्वप्रथम पत्तियों, शाखाओं एवं बाद में फूल कलियों पर भूरे धब्बे के रूप में दिखाई पड़ते हैं। बाद में प्रभावित कली सिकुड़कर सूख जाती है।

उपचारः–

इसके बचाव हेतु डाइथेन एम–45 का 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम दवा 1 लिटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए।

पावडरी मिल्ड्यूः–

इस बीमारी के कारण पत्तियों, शाखाओं एवं पुष्प कलियों पर सफेद फफूंदी का जमाव होता है। जो बाद में भूरे रंग का हो जाता है।

उपचारः–

रोग की रोकथाम हेतु घुलनशील गंधक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

प्रमुख कीट

माइटः–

पत्तियों की निचली सतह पर लाल रंग की मकड़ी जाला बनाकर रहती है। जो कि पत्तियों तथा पुष्प कलिकाओं/फूलों से रस चूसते रहते हैं, जिससे पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है तथा पुष्प कलिकाऐं खिल नहीं पाती है।

उपचारः–

इसकी रोकथाम हेतु वरटीमेक या कैराथेन 0.5 मिली. प्रति लीटर परनी के घोल का छिड़काव पत्तियों के दोनों तरफ करना चाहिए।

प्रशासनिक भवन

शैक्षणिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

डॉ. एस.एस. सिंह

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

दूरभाष : +91–789746699

ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/79

गेंदा की व्यवसायिक खेती

प्रियंका शर्मा एवं गौरव शर्मा

उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय

प्रसार शिक्षा निदेशालय

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

गेंदा की व्यवसायिक खेती

गेंदा

गेंदा के फूल मुख्यतः माला बनाने, धार्मिक स्थलों, पूजा, विवाह, शादी भवनों, नए भवन, गाड़ियां, मंदिरों इत्यादि की सजावट में काम में आते हैं। इसे गमलों व क्योरियों में भी सजावट हेतु उगाया जाता है। गेंदे के फूलों का उपयोग सुंदरता के अलावा मुर्गियों के अंडों के जर्दी का रंग अधिक गहरा करने में सहायक केरोटिनोयड के लिए भी हो रहा है। गेंदा को खासतौर पर सब्जियों जैसे टमाटर, बैगन, मिर्च, आदि के साथ मिश्रित तौर पर उगाकर काफी हद तक सूत्रकृमि के नियंत्रण में भी सफलता मिली है। बुन्देलखण्ड में चूंकि बहुत सारे धार्मिक एवं पर्यटन स्थल जैसे झाँसी, दतिया, ओरक्षा, खजुराहा इत्यादि हैं इसलिए यहाँ गेंदे के फूलों की साल भर मांग रहती है

वर्ष भर गेंदा पुष्प उत्पादन के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :-

प्रकार एवं प्रजातियां :-

गेंदा मुख्यतः दो प्रकार के होते है :

- **अफ्रिकन गेंदा:** इनके पौधे अधिक ऊचें (औसतन 75 सें.मी.) एवं विभिन्न रंग जैसे नारंगी, पीले आदि पाये जाते हैं।
- **फ्रेंच गेंदा:** यह पौधे अधिकतर बौने कद (20–40सें. मी.) के होते हैं। इनके पुष्प भी आकार में छोटे होते है। यह पुष्प सुनहरी लाल, नारंगी, पीले एवं मिले जुले रंग के होते हैं।

उन्नत किस्में :-

प्रकार	किस्में
अफ्रीकन गेंदा	पंजाब गेंदा–1, पूसा नारंगी गेंदा, पूसा बसंती गेंदा, पूसा बहार
फ्रेंन्च गेंदा	पूसा अर्पिता, पूसा दीप, जाफरी, सीजी गेंदा–1

बीज बुवाई का समय एवं मात्रा :

उन्नत किस्मों के लिए 1.5 किलोग्राम बीज एवं संकर किस्मों का 700–800 ग्राम बीज प्रति हैक्टेयर पर्याप्त रहता है। बीज की बुवाई मौसम के अनुसार विभिन्न महीनों में निम्नानुसार की जाती है।

रोपाई एवं दूरी :-

प्रकार	लगाने की दूरी
अफ्रीकन गेंदा	40 x 40 सेमी.
फ्रेंन्च गेंदा	30 x 30 सेमी.

बुंदेलखंड क्षेत्र में वर्षाकालीन और शरदकालीन फसल के लिए जुलाई से मध्य नवंबर तक रोपण किया जा सकता है ।

प्रबंधन :-

पौधशाला प्रबंधन :-

नर्सरी हेतु ऊँची क्यारियाँ :-

नर्सरी में क्यारियां बनाते समय बराबर मात्रा (1:1:1) अथवा 2:1:1 मात्रा में मिट्टी, गोबर खाद एवं रेत डालकर भुरभुरा बना लेना चाहिए। बीज को 5 सेमी. की गहराई एवं 5 सेमी. की दूरी पर बोया जाता है एवं नर्सरी हेतु तैयार किए गए मिश्रण से ढक कर हल्की सिंचाई कर देना चाहिए।

कटिंग द्वारा :-

मातृ पौधों से नए तनों के ऊपरी भाग (5–7 सेमी.) को काट कर एवं जड़ दीक्षा और वृद्धि के लिए वृद्धि नियामक जैसे आई.बी.ए./एन.ए.ए. से उपचार करके कोकोपीट अथवा रेत में लगा दिया जाता है, जो कि लगभग 15–25 दिन में रोपण हेतु तैयार हो जाती है।

भूमि की तैयारी :

भूमि की अच्छी तरह 3–4 जुताई करके पाटे की मदद से मिट्टी समतल एवं भुरभुरी कर तैयार करना चाहिए। जल निकासयुक्त बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. 6.5 से 7 हो उत्तम होती है।

बुवाई एवं रोपाई का समय तथा उपज

समय	नर्सरी में बुवाई का समय	पौध रोपण का समय
शरदकालीन	सितम्बर–अक्टूबर	अक्टूबर–नवम्बर
ग्रीष्मकालीन	जनवरी–फरवरी	फरवरी–मार्च
वर्षाकालीन	मई–जून	जून–जुलाई

इनका रोपण सायंकाल में करना चाहिए एवं यह ध्यान रखा जाए कि उखाड़ते समय जड़ों को नुकसान न पहुंचे।

खाद की मात्रा :

20–25 टन कम्पोस्ट, 150 किग्रा नत्रजन, 100 किग्रा. फास्फोरस एवं पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से देना चाहिए। कम्पोस्ट, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा एवं नत्रजन की आधी मात्रा भूमि की तैयारी करते समय डाल देना चाहिए जबकि नत्रजन की आधी मात्रा पौधे लगाने के एक माह बाद देना चाहिए।

सिंचाईः

भूमि की किस्म एवं मौसम पर निर्भर करती है। गर्मियों में 4–5 दिन के अंतर पर तथा सर्दियों में 7–10 दिन के अंतर पर हल्की सिंचाई करना लाभदायक रहता है।

कृषि क्रियाएं :

इन पौधों में कम से कम दो निंदाई–गुड़ाई आवश्यक है। प्रथम गुड़ाई पौधों के रोपण के 20–25 दिन बाद तथा द्वितीय गुड़ाई 40–45 दिन बाद करनी चाहिए। समय–समय पर खरपतवार नियंत्रण करना चाहिए।

पिनचिंग

खेत में पौध लगाने के 30 दिन बाद ऊपर से शीर्ष भाग का नोचन करना चाहिए जिससे सहायक शाखाओं की वृद्धि अधिक होती है।